e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 6, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

6381 907 438 6381 907 438 ijmrset@gmail.com www.ijmrset.com

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601018 |

गरासिया जनजाति की सामाजिक-आर्थिक दशा: बांसवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में

Dr. Sunita Meena

Associate Professor , History, Government Muk Badhir College, Jaipur, Rajasthan, India

सार

बांसवाड़ा भारतीय राज्य राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित एक शहर है। यह गुजरात और मध्य प्रदेश दोनों राज्यों की सीमा के निकट है। बांसवाड़ा की स्थापना राजा बांसिया भील ने की थी जिसे वाहिया भील के नाम से भी जाना जाता है। बांसवाडा के राजा बांसिया के नाम पर ही इसका नाम बांसवाड़ा पड़ा। इसे "सौ द्वीपों का नगर" भी कहते हैं क्योंकि यहाँ से होकर बहने वाली माही नदी में अनेकानेक से द्वीप हैं। बांसवाड़ा के आसपास का क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में समतल और उपजाऊ है, माही बांसवाड़ा की प्रमुख नदी है। मक्का, गेहूँ और चना बांसवाड़ा की प्रमुख फ़सलें हैं। बांसवाड़ा में लोह-अयस्क, सीसा, जस्ता, चांदी और मैंगनीज पाया जाता है। इस क्षेत्र का गठन 1530 में बांसवाड़ा रजवाड़े के रूप में किया गया था और बांसवाड़ा शहर इसकी राजधानी था। 1948 में राजस्थान राज्य में विलय होने से पहले यह मूल डूंगरपुर राज्य का एक भाग था। बांसवाड़ा में गरासिया एक बदला लेने वाले व्यक्ति के लिए संज्ञा दी जाती है भाई बंधुओं से संबंधित ठीक न होने पर गरासिया कहते हैं.मीणा और भीलों के बाद राजस्थान का तीसरा बड़ा जनजाति समूह गरासिया है। गरासिया मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के सिरोही उदयपुर डूंगरपुर बांसवाड़ा पाली जिलों के पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते है।गरासियों के गांव “पाल” कहलाते है,एक ही गोत्र के लोग एक पाल में निवास करते हैं। मुखिया को पटेल कहा जाता है। अनाज के भंडारण के लिए कोठियों का निर्माण किया जाता है, जिसे “सोहरी” कहते हैं। कमरे के बाहर का बरामदा “ओसरा” आता है।गरासिया जनजाति में पितृसत्तात्मक परिवार का प्रचलन है। पिता ही परिवार का मुखिया तथा परिवार के भरण पोषण के लिए उत्तरदाई होता है। गरासिया समाज को दो भागों में विभक्त हैं।

- भील गरासिया गरासिया पुरुष यदि किसी भील स्त्री से विवाह कर लेता है,तो उसे गरासिया भील कहते है।
- गमेती गरासिया यदि कोई भील पुरुष गरासिया स्त्री से विवाह कर लेता है,तो वह गमेती गरासिया कहलाते है।

परिचय

गरासिया में तीन प्रकार के विवाह प्रचलित है।

1. मोर बंधिया विवाह
2. पहरावना विवाह
3. ताणना विवाह

होली और गणगौर दो गरासियों का मुख्य त्योहार हैं। गणगौर पर गौरी पूजा के समय गौर नृत्य किया जाता है। गौर नृत्य इसीलिए भी प्रसिद्ध है,क्योंकि इसमें किसी भी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता। गरासिया शिव भैरव तथा दुर्गा की पूजा करते हैं यह लोग अत्यंत अंधविश्वासी होते हैं। यह गरासिया दक्षिण पूर्वी राजस्थान बांसवाड़ा , सिरोही, डूंगरपुर, उदयपुर एवं पाली जिला की सीमा पर रहते हैं प्रमुख तराशा सिरोही जिले की आबूरोड एवं पिंडवाड़ा तहसील तक सीमित है इनका वितरण इस बात का द्योतक है कि यह लोग राजस्थान गुजरात की सीमा पर पाली उदयपुर एवं जालौर के किनारे कतार में फैले हुए हैं उनकी जनसंख्या समग्र आदिवासी जनसंख्या का 6.70% है. जरा सा सांवले और स्वस्थ एवं लंबे कद के होते हैं गरासिया आदमी अष्ट पोस्ट होते हैं स्त्रियां थोड़ी आलसी एवं मस्त तबीयत की होती है. जलवायु की दृष्टि से यह क्षेत्र भीलों का प्रदेश सा है सामने तो इस प्रदेश में वर्षा की अधिकता रहती है समतल और उपजाऊ भूमि के अभाव में ही गरासिया को प्रकृति ने आदिवासी बनाए रखा है यहां कहीं खनिज पदार्थ भी पाए जाते हैं. लेकिन सर्वेक्षण में होने से उनका गरासिया के आर्थिक जीवन पर कोई महत्व नहीं पड़ा है पानी की कमी वर्षा की दृष्टि से नहीं है लेकिन गर्मी के लिए सुरक्षित पानी ना होने से बहुधा जानवर और मनुष्य को परेशानी भुगतनी पड़ती है समस्त गरासिया

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601018 |

प्रदेश सघन वनों में आच्छदित है वनों से इन्हें लकड़ी एवं अन्य उपज तथा शिकार प्राप्त होता रहता है. भीलों की तरह मक्का बाजरा व मलीचा आदि है इसके अतिरिक्त मांसाहारी होने से शिकार से मांस जंगली फल भी भोजन का मुख्य अंग है यह भी गौ मांस नहीं खाते हैं सूअर खरगोश हिरण का मांस बडी रूचि से खाते हैं.[1]

ऊंचे तापक्रम में रहने से ग्राहकों को अधिक कपड़ों की आवश्यकता नहीं रहती इसमें पुरुष को स्नातक नीति धोती पहनते हैं वह शरीर पर रखी और सिर पर सफेद या लाल फेटा साफा बांधते हैं विवाहित स्त्रियां लहंगा ओढ़नी पहनती है घूमा करती है इसके अतिरिक्त एवं रहते हैं यह लोग बड़े बड़े बाल होते हैं पुरुष चांदी के गहने पहनने में मानते हैं बड़े चाव से ही पहनती है नाचने के उतने ही शौकीन है जितने भी है. ग्रास के मकान जंगलों में प्राप्त होने वाली लकड़ी के बने होते हैं कभी-कभी इनके मकान में लकड़ी के मचान बनाकर दो मंजिलें बना देते हैं. अंधविश्वास ने तो गरासिया में भी घर कर रखा है यह भी जादू मंत्र टोना डायन भूत प्रेतों में विश्वास करते हैं यह इन्हें खुश करने के लिए बलि चढ़ाते हैं राशियों का प्रमुख त्यौहार हिंदुओं की तरह दशहरा दीपावली मकर सक्रांति होली आदि है इन्हें मेलों में भी सम्मिलित होने से बहुत आनंद आता है. सिरोही में सारकेश्वर के मेले में हजारों गरासिया सम्मिलित होते हैं जहां वे अपनी आवश्यकता की चीजें खरीदते हैं और जीवन साथी का चयन करने के लिए सारकेश्वर का मेला प्रसिद्ध है.प्राय इन इनके गांव या फला 10-12 घरों के होते हैं पाल का मुखिया पालवी कहलाता है. यह प्राय पैतृक पद होता है वह सब प्रकार के निर्णय करता है गरासिया अपने को भीलो से ऊंचा मानते हैं.

विचार-विमर्श

गरासियो के प्रकार

1. भील गरासिया – भील गरासिया भीलों से अपना संबंध बतलाते हैं उनके गोत्र भी भीलों के समान ही होते हैं
2. राजपूत गरासिया – राजपूत गरासिया अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते हैं और उनके गोत्र भी राजपूतों के परमार सोलंकी चौहान आदि जैसे होते हैं.

भील गरासिया को राजपूत गरासिया निम्न श्रेणी का मानते हैं और उनके साथ विवाह संबंध नहीं करते हैं खान-पान में भले ही हिस्सा बांट लेते हैं गरासिया में वैवाहिक संबंधों में क्षेत्रीय भावना अधिक है अपने पाल या चौक लेकर बाहर नहीं जाते हैं विवाह में लड़की के लिए लड़के के पिता को दबाया पैसा या कभी-कभी पशु भी देने पड़ते हैं.अधिकांश यह रकम नकदी में ली जा सकती है गरासिया में भी ना तेरे होते हैं जो मेले या विवाह में ही होते हैं ना तेरे का कानून करार पंचायत देती है उसमें लड़की के पिता को मायरो पहले वाले पति को झगड़ा दिलाती है इसमें नकद रुपया एवं पशु भी सम्मिलित है.गरासिया में मृतक को जलाया जाता है और 12 दिन भोज किया जाता है परिवार में सबसे बड़ा या वृद्ध व्यक्ति ही सर्वे सर्वा होता है गरासियों की आर्थिक संपत्ति भी भीलो की तरह झोंपड़ा, कुछ पशु एवं एक छोटा सा उबड़ खाबड़ खेत का टुकड़ा एवं कुछ वृक्ष आम व महुआ आदि होते हैं इसके अतिरिक्त घर में 1-2 पीतल के बर्तन गुदड़े, कुल्हाड़ी , तीर और खेती के औजार होते हैं[2]

गरासिया जनजाति के प्रमुख नृत्य

गौर नृत्य गणगौर के अवसर पर गरासिया स्त्री पुरुषों द्वारा किया जाने वाला अनुष्ठान करते है इसमें गौरजा वाद्य यंत्र प्रयोग में लिया जाता है जो बेहद आकर्षक होता है.वालर नृत्य स्त्री पुरुषों द्वारा किया जाने वाला वालर गरासियो का प्रसिद्ध नृत्य है यह नृत्य धीमी गति का है तथा इसमें किसी वाद्य का प्रयोग नहीं होता है गीत किले के साथ पद संचालित होते हैं यह नृत्य अर्धवृत्त में होता है बाहर के अर्धवृत्त में पुरुष व अंदर के अर्धवृत्त में महिलाएं रहती है इस नृत्य का प्रारंभ एक पुरुष हाथ में छाता या तलवार लेकर करता है गर्वा नृत्य गरासिया का सबसे मोहक नृत्य गर्वा है इसमें केवल स्त्रियां भाग लेती है.कूद नृत्य गरासिया स्त्री व पुरुषों द्वारा सम्मिलित रूप से बिना वाद्ययंत्र के पंक्तिबद्ध होकर किया जाने वाला नृत्य जिस में नृत्य करते समय अर्धवृत्त बनाते हैं तथा लय के लिए तालियों का इस्तेमाल किया जाता है.जवारा नृत्य होली दहन के पूर्व उसके चारों और घेरा बनाकर ढोल के गहरे घोष के साथ गरासिया स्त्री पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक नृत्य जिसमें स्त्रियां हाथ में जवारा की बालियां लिए नृत्य करती है.लूर नृत्य गरासिया महिलाओं द्वारा वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष से रिश्ते की मांग के समय किया जाने वाला नृत्य है मोरिया नृत्य विवाह के अवसर पर गणपति स्थापना के पश्चात रात्रि को गरासिया पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है.मादल नृत्य यह मांगलिक अवसरों पर गरासिया महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है इस पर गुजराती गरबे का प्रभाव है जिसमें थाली व बांसुरी का प्रयोग होता है रायण नृत्य मांगलिक अवसरों पर गरासिया पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है[3]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601018 |

आर्थिक संगठन

आजकल सरकार ने गरासिया को शिक्षित करने के लिए स्कूल खोलने हैं कुछ चिकित्सा संबंधी प्रबंध भी किया है कुछ गरासिया सेना में भी भर्ती हो गए हैं कुछ बांसवाड़ा के पर्यटन केंद्र होने से पर्यटकों की सेवा में लग गए हैं तथा सड़कों एवं यातायात के साधनों में भी लग गए हैं इन पर भी ईसाई पादरी अपना प्रभाव जमाने के लिए सब प्रकार के पर्यटन कर रहे हैं जो भविष्य में संकट करने वाली बात है[4]

गरासिया का आर्थिक तंत्र

यद्यपि गरासिया लोग वनों में रहते हैं वन ही उनके जीवन का मुख्य आधार है फिर भी 85% गरासिया कृषि कार्य में लगे हुए हैं या मक्का पैदा करते हैं कभी-कभी पानी मिलने पर गेहूं जो भी पैदा कर लेते हैं गरासिया के यहां एक ही फसल होती है वर्ष के अन्य भागों में लकड़ी काटना ,मजदूरी करना ,ढोर चराना, शिकार आदि कार्य करते हैं भीलों की तुलना में गरासिया अधिक संपन्न होते हैं[5]

प्रमुख तथ्य

मीणा व भील के बाद राजस्थान की तीसरी प्रमुख जनजाति है यह मुख्यतः दक्षिण राजस्थान में है ये चौहान राजपूतों के वंशज है परंतु अब भीलों के समान आदिम प्रकार का जीवन व्यतीत करने लगे हैं इनमें मोर बंधिया, पहरावना व ताणना तीन प्रकार के विवाह प्रचलित है

परिणाम

गरासिया राजस्थान की कुल आदिवासी जनसंख्या में लगभग 2.5 प्रतिशत है। यह जनजाति मुख्य रूप से बांसवाड़ा **जिले , खेरवाड़ा, कोटड़ा, झाड़ोल, फलासिया, गोगुन्दा क्षेत्र एवं सिरोही जिले के पिण्डवाड़ा व आबू रोड़ तथा पाली जिले के बाली क्षेत्र में बसी हुई है। सर्वाधिक गरासिया** बांसवाड़ा **, सिरोही, उदयपुर एवं पाली जिले में है। गरासिया शब्द का उच्चारण कई तरह से किया जाता है - ग्रामिया, गिरासिया, गिरेसिया, ग्रासिया। गरासिया शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के ग्रास शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'कौर, निवाला या निर्वाह करने साधन'।**
उदयपुर के गरासिया गोगुन्दा (देवला) को अपनी उत्पत्ति मानते हैं। कर्नल जेम्स टॉड ने गरासियों की उत्पति गवास शब्द से मानी है। जिसका अभिप्राय सर्वेन्ट होता है। गरासिया जनजाति के लोग स्वयं को चौहान राजपूतों का वंशज मानते हैं। लोक कथाओं के अनुसार गरासिया जनजाति के लोग यह मानते हैं कि ये पूर्व में अयोध्या के निवासी थे और भगवान रामचन्द्र के वंशज थे। ये लोग यह भी मानते हैं कि उनकी गौत्रें बापा रावल की सन्तानों से उत्पन्न हुई थीं। इनमें होलंकी (सोलंकी), डामोर, सोहान (चौहान), वादिया, राईदरा एवं हीरावत आदि गोत्र होते हैं। ये गोत्र भील तथा मीणा जाति में भी पाई जाती है।[6]

सामाजिक जीवन-

आवास-

भीलों के एवं इनके घरों, जीने के तरीकों, भाषा, तीर कमान आदि में कई समानताएं पाई जाती है। इनके घर 'घेर' कहलाते है। इनके गाँव बिखरे हुए होते हैं। ये गाँव पहाड़ियों पर दूर दूर छितरे हुए पाए जाते हैं। गरासियों के गांव 'फालिया' कहलाते है। ये लोग अपने घर प्रायः पहाड़ों की ढलान बताते हैं। एक गाँव में प्रायः एक ही गोत्र के लोग रहते हैं। इनकी भाषा में गुजराती, भीली, मेवाड़ी व मारवाडी का मिश्रण है। इसमें गुजराती के शब्द अधिक होते हैं। गरासिया बोली में 'च' को 'स' बोलते हैं जैसे चौहान को सोहान बोलेंगे। इसी प्रकार 'स' को 'ह' बोलते हैं, जैसे- सोलंकी को होलंकी।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601018 |

विवाह-

इनमें विभिन्न प्रकार के विवाह प्रचलित हैं-

मौर बाँधिया विवाह-- इस प्रकार के विवाह में फेरे आदि संस्कार होते हैं।
पहरावना विवाह- इसमें नाममात्र के फेरे होते हैं।
ताणना विवाह- इसमें वर-पक्ष कन्या-पक्ष को केवल कन्या के मूल्य के रूप में वैवाहिक भेंट देता है।
सेवा विवाह - गरासियों में प्रचलित विवाह जिसमें वर, वधू के घर, घर जमाई बनकर रहता है।
आटा साटा विवाह- आदिवासियों में प्रचलित वह विवाह प्रथा, जिसमें लड़की देने के बदले में उसी घर की लड़की को बहू के रूप में लेते है।
खेवणा (माता विवाह) - विवाहित स्त्री द्वारा अपने प्रेमी के साथ भागकर विवाह करना।
मेलबो विवाह - गरासियों में प्रचलित इस विवाह में विवाह खर्च बचाने के उद्देश्य से वधू को वर के घर छोड देते है।
नाता या नातरा प्रथा - इस प्रथा में विवाहित स्त्री अपने पति, बच्चों को छोड़कर दूसरे पुरूष से विवाह कर लेती है।[7]

रहन-सहन तथा वेश-भूषा की दृष्टि से गरासिया जनजाति की अपनी एक अलग पहचान है। गरासिया पुरुष धोती कमीज पहनते हैं और सिर पर तौलिया बाँधते हैं। गरासिया स्त्रियाँ गहरे रंग और तड़क-भड़क वाले रंगीन घाघरा व ओढ़नी पहनती हैं। वे अपने तन को पूर्ण रूप से ढंकती हैं। इस जनजाति विवाहित महिलाएं चमकीले रंग के वस्त्र पहनती हैं जबकि विधवाएं केवल काले या गहरे नीले रंग का उपयोग करती हैं। गरासिया स्त्रियां कांच का जड़ा हुआ लाल रंग का घाघरा व ओढ़णी, कुर्ता व कांचली प्रमुख रूप से पहनती है। कुंआरी लड़कियां लाख की चूड़ियां पहनती है व विवाहित स्त्रियां हाथी दांत की चूड़ियां पहनती है। वे नारियल के खोल की चूड़ियां भी पहनती हैं। इन महिलाओं के चेहरे पर छोटे बिंदुओं का गोदना और ठोड़ी पर बिंदुओं की दो पंक्तियों का गोदना पाया जाता है। गरासिया पुरूष एक धोती, एक झूलकी/ पुठियों (कमीज), और सिर पर साफा (फेंटा) बांधता है। हाथों में कड़ले (कड़े) व भाटली, गले में पत्रला अथवा हंसली और कानों में झेले अथवा मूरकी, लूंग, तंगल आदि पहनते हैं। गरासिया लोगों को वस्त्रों पर कशीदाकारी बहुत पसंद है।

समाज एवं परिवार-

इनका समाज मुख्यतः एकाकी परिवारों में विभक्त होता है। परिवार पितृसत्तात्मक होते है। पिता परिवार का मुखिया होता है। समाज में गोद लेने की परंपरा भी प्रचलित है। इनके समाज में जाति पंचायत का विशेष महत्व है। ग्राम व भाखर स्तर पर जाति पंचायत होती है। पंचायत का मुखिया "पटेल या सहलोत या पालवी" कहलाता है। पंचायत द्वारा आर्थिक व शारीरिक दोनों प्रकार के दंड दिए जाते हैं।
सामाजिक संरचना की दृष्टि से गरासिया आदिवासी दो भागों या जातियों में विभक्त हैं - मोटी जात (मोटी नियात) और नानकी जात (नेनकी नियात)। मोटी का अर्थ बड़े से है तथा नेनकी या नानकी का अर्थ छोटी से है। मोटी नियात के गरासिया स्वयं को उच्च वर्ग के मानते है, जो अपने को बाबोर हाइया कहते है। नेनकी नियात को निम्न श्रेणी का माना जाता है तथा नेनकी नियात के गरासिया माडेरिया कहलाते है। हालांकि इन दोनों भागों में कोई ऐसा विशेष संरचनात्मक तत्त्व नहीं होता है जिससे इनमें कोई अंतर दिखाई पद सके। लेकिन व्यवहार शादी-ब्याह, खान-पान, आदि में ये भेद अत्यधिक स्पष्ट हो जाता है। मोटी जात के गरासिया कहते हैं कि नानकी जात के गरासियों के लिए पवित्र-अपवित्र कुछ नहीं होता है तथा वे सभी तरह का मांस खा लेते हैं।
गरासिया लोग पूर्णतः प्रकृति जीवी है। इनके निवास कच्चे, घासफूस, बांस-बल्ली से युक्त बड़े ही साफ-सुथरे तथा स्वच्छ पर्यावरण दर्शित मिलेंगे।
गरासिया लोग शिव, भैरव व दुर्गा के उपासक होते है। इनमें कई सारे अंधविश्वास व्याप्त है।
भील गरासियां- यदि कोई गरासिया पुरूष किसी भील (या गमेती) स्त्री से विवाह कर लेता हो तो ऐसा परिवार को भील (या गमेती) गरासिया कहा जाता है।
गरासिया अनाज का भंडारण कोठियों में करते है जिन्हें सोहरी कहा जाता है।[8]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601018 |

गरासियों के मेले-

इनके प्रतिवर्ष कई स्थानीय व संभागीय मेले भरते हैं। गरासियों का प्रमुख मेला 'गौर का मेला या अन्जारी का मेला' है जो सिरोही जिले में वैशाख पूर्णिमा को लगता है जिसे गरासिया का जनजाति कुम्भ कहते हैं। इनके बड़े मेले "मनखारो मेलो" कहलाते हैं। गुजरात के चौपानी क्षेत्र का मनखारो मेलो प्रसिद्ध है। देवला महादेव मेला, गोर मालासोर मेला, गोगुन्दा का मेला, अम्बाजी का मेला, अधर देव मेला, युवाओं के लिए इन मेलों का बड़ा महत्व है। गरासिया युवक मेलों में अपने जीवन साथी का चयन भी करते हैं।

गरासियों के नृत्य -

वालर, गरबा, गैर, कुदा, लूर, मोरिया, मांदल, जवारा व गौर गरासियों के प्रमुख नृत्य हैं। ये नृत्य करते समय लय और आनंद में डूब जाते हैं।

- वालर नृत्य में स्त्री-पुरुष अर्द्धवृत्त बनाकर नाचते हैं। इस नृत्य को करते समय किसी भी प्रकार का कोई वाद्य यन्त्र नहीं बजता हैं। [9]
- मांदल नृत्य गरासिया महिलाओं द्वारा किया जाता हैं। विवाह आदि उत्सवों पर किए जाने वाले इस नृत्य में महिलाएँ वृत्ताकार पथ में नृत्य करती हैं।
- गौर नृत्य को गणगौर के अवसर पर किया जाता है। यह एक युगल नृत्य हैं, जिसे स्त्री-पुरूष दोनों के द्वारा किया जाता हैं।
- लूर नृत्य को लूर गोत्र की गरासिया महिलाओं द्वारा मेलों व विवाह के अवसर पर किया जाता हैं।
- जवारा नृत्य को होली के अवसर पर किया जाता है। इसे गरासिया स्त्री व पुरूष दोनों करते हैं।
- कूद नृत्य को स्त्री व पुरूष दोनों द्वारा किया जाता हैं। किसी भी प्रकार का वाद्य यन्त्र नहीं बजते हैं तथा यह पंक्तिबद्ध तरीके से किया जाता हैं।
- मोरिया नृत्य गरासियों द्वारा विवाह के अवसर पर गणपति स्थापना के बाद केवल पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

गरासियों में गोदना परंपरा -
भीलों की तरह इनमें भी गोदना गुदवाने की परंपरा है। महिलाएँ प्रायः ललाट व ठोडी पर गोदने गुदवाती है। चेहरे के गोदना 'माण्डलिया' कहलाते हैं जबकि हाथ-पाँव पर गोदना माण्डला कहलाता है। इनका मानना है कि गुदवाने से पूर्वज उस व्यक्ति की रक्षा करते है एवं जीवन खुशहाल बना रहता है। गोदने में फूल-पत्ते, और जंगली पौधे बनाएं जाते हैं। जानवरों में मोर, बिच्छु, साँप, तोते, आदि गुदवाये जाते हैं। कई बार स्वयं का नाम गुदवाया जाता है। वयस्क युवक-युवतियां अपने प्रेमी-प्रेमिका का नाम भी गुदवाते हैं।[10]

गरासियों की अर्थव्यवस्था -

गरासियों की अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन, शिकार एवं वनोत्पाद के एकत्रीकरण पर निर्भर है। अब ये लोग मजदूरी करने कस्बों व शहरों में भी जाने लगे हैं।

अन्य प्रमुख बातें-

- गरासिया द्वारा सामूहिक रूप से की जाने वाली कृषि को 'हरीभावरी' कहते हैं।
- गरासियों में प्रचलित मृत्युभोज प्रथा को 'कांधिया या मेक' कहते हैं।
- गरासियों के विकास के लिए कार्य करने वाली सहकारी संस्था को 'हेलरू' कहते हैं।
- गरासिया लोग मृतक व्यक्ति की स्मृति मिट्टी का स्मारक बनाते है, उसे 'हूरे' कहते हैं।
- गरासियों की अनाज संग्रहित करने की कोठियों को 'सोहरी' कहते हैं।
- माउण्ट आबू की नक्की झील इनका पवित्र स्थान है जहां ये अपने पूर्वजो का अस्थि विसर्जन करते है।
- मोर को ये आदर्श पक्षी मानते है। इनके कई लोकगीतों में मोर का प्रमुखता से वर्णन आया है।[11]
- ढोल, नगाड़ा, मांदल, ढोलक, कोंडी, चंग, डमरू, थाली, मंझीरा, झालर, घुंघुरू, बांसुरी आदि गरासियों के प्रिय वाद्य है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601018 |

- **घेण्टी : गरासिया घरों में प्रयुक्त हाथ चक्की को कहते हैं।**

निष्कर्ष

ऐतिहासिक तौर पर वागड़ राज्य की स्थापना के कई तथ्य पाए जाते हैं। एक मान्यता के अनुसार बंसिया भील ने बांसवाड़ा की नीव रखी थी जबकि एक दूसरा मत यह है कि गुहिलोतों ने वागड़ राज्य की स्थापना की थी। इन तथ्यों के बावजूद ज्यादातर यही माना जाता है कि इस राज्य के वास्तिवक संस्थापक सामन्तसिंह थे। उन्होंने 1179 ईस्वी के लगभग वागड़ प्रदेश को अधिकृत किया। सामन्तसिंह के पुत्र सिंहडदेव के पौत्र वीरसिंह देव (विक्रम सम्वत 1343—1349) तक वागड़ के गुहिलवंशीय राजाओं की राजधानी बड़ौदा—डूंगरपुर थी। जब वीरसिंह के पोते डूंगरसिंह ने डूंगरपुर शहर बसाकर इसे अपनी राजधानी बनाया तब से वागड़ के राज्य का नाम उसकी नई राजधानी के नाम से डूंगरपुर प्रसिद्ध हुआ।

बांसवाड़ा के पूर्व में प्रतिवेशी पहाड़ियों द्वारा बने एक गर्त में बाई तालाब नाम से ज्ञात एक कृत्रिम तालाब है जो महारावल जगमाल की रानी द्वारा निर्मित बताया जाता है। लगभग 1 किलोमीटर दूर रियासत के शासकों की छतरियां हैं। कस्बे में कुछ हिन्दू व जैन मन्दिर व एक पुरानी मस्जिद भी है। अब्दुल्ला पीर दरगाह निकटस्थ ग्राम भवानपुरा में स्थित है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष बोहरा जाति के लोग बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं। माही परियोजना बांध की नहरों में पानी वितरण के लिए शहर के पास निर्मित कागदी पिक-अप-वियर है जो सैलानियों के लिए आकर्षण का मुख्य केन्द्र है।

इस जनजाति के लोग मुख्यतः राजस्थान और गुजरात में निवास करते हैं। ये लोग मुख्यतः राजस्थान के पाली, सिरोही और उदयपुर क्षेत्रों से विस्थापित हैं।[12]

राजस्थान के भील सदियो पहले स्थलांतरित करके उत्तर गुजरात अरवल्ली -भिलोड़ा, मेघरज, साबरकाँठा-विजयनगर, बनासकांठा में निवास कर रहे हैं जो अभी आदिवासी डुंगरी गरासिया नाम से पहेचाने जाते है

रहन-सहन तथा वेश-भूषा की दृष्टि से गरासिया जनजाति की अपनी एक अलग पहचान है। गरासिया पुरुष धोती कमीज पहनते हैं और सिर पर तौलिया बाँधते हैं। गरासिया स्त्रियाँ गहरे रंग और तड़क - भड़क वाले रंगीन घाघरा व ओढ़नी पहनती हैं। वे अपने तन को पूर्ण रूप से ढंकती हैं।

आवास- भीलों के एवं इनके घरों, जीने के तरीकों, भाषा, तीर कमान आदि में कई समानताएं पाई जाती है।इनके घर 'घेर' कहलाते है। इनके गाँव बिखरे हुए होते हैं। ये गाँव पहाड़ियों पर दूर दूर छितरे हुए पाए जाते हैं। गरासियों के गाँव 'फालिया' कहलाते है। येलोग अपने घर प्रायः पहाड़ों की ढलान बताते हैं। एक गाँव में प्रायः एक ही गोत्र के लोग रहते हैं। इनकी भाषा में गुजराती, भीली, मेवाड़ी व मारवाडी का मिश्रण है।

विवाह- इनमें तीन प्रकार के विवाह प्रचलित हैं- (i) मौर बाँधिया- इस प्रकार के विवाह में फेरे आदि संस्कार होते हैं। (ii) पहरावना विवाह- इसमें नाममात्र के फेरे होते हैं। (iii) ताणना विवाह- इसमें वर पक्ष कन्या पक्ष को केवल कन्या के मूल्य के रूप में वैवाहिक भेंट देता है। (iv) विधवा विवाह- इनमें इसका भी प्रचलन हैं।[11]

समाज एवं परिवार- इनका समाज मुख्यतः एकाकी परिवारों में विभक्तहोता है। पिता परिवार का मुखिया होता है। समाज में गोद लेने की परंपरा भीप्रचलित है। इनके समाज में जाति पंचायत का विशेष महत्व है। ग्राम व भाखरस्तर पर जाति पंचायत होती है। पंचायत का मुखिया"पटेल या सहलोत" कहलाताहै। पंचायत द्वारा आर्थिक व शारीरिक दोनों प्रकार के दंड दिए जाते हैं।

गरासियों के मेले- इनके प्रतिवर्ष कई स्थानीय व संभागीय मेले भरते हैं।गरासियों का प्रमुख मेला 'गौर का मेला या अन्जारी का मेला' है जो सिरोही जिले में में वैशाख पूर्णिमा को लगता है।इनके बड़े मेले "मनखारो मेलो" कहलाते हैं।गुजरात के चौपानी क्षेत्र का मनखारो मेलो प्रसिद्ध है। युवाओं के लिए इन मेलों का बड़ा महत्व है। गरासिया युवक मेलों में अपने जीवन साथी का चयन भी करते हैं।

गरासियों के नृत्य- वालर, गरबा, गैर, कुदा, लूर, मोरिया व गौर गरासियों के प्रमुख नृत्य हैं। ये नृत्य करते समय लय और आनन्द में डूब जाते हैं।

गरासियों में गोदना परंपरा- भीलों की तरह इनमें भी गोदना गुदवाने की परंपरा है। महिलाएँ प्रायः ललाट व ठोडी पर गोदने गुदवाती है।[12]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601018 |

संदर्भ

1. "Uttar Pradesh in Statistics," Kripa Shankar, APH Publishing, 1987, ISBN 9788170240716
2. ↑ "Political Process in Uttar Pradesh: Identity, Economic Reforms, and Governance Archived 2017-04-23 at the Wayback Machine," Sudha Pai (editor), Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, Pearson Education India, 2007, ISBN 9788131707975
3. ^ आदिवासी राजस्थान: अरावली पर धूप । उदयपुर: हिमांशु प्रकाशन। 1992.
4. ^ डेव, पीसी (1960)। ग्रासिया, जिसे क्षत्रिय ग्रासिया भी कहा जाता है । दिल्ली: भारतीय आदिमजाति सेवक संघ।
5. ^ मान (1993) , पृ. 103
6. ^ मान और मान (1989) , पीपी. 81-82
7. मान, रण सिंह (1993), भारतीय जनजातियों की संस्कृति और एकीकरण , एमडी प्रकाशन प्रा। लिमिटेड, आईएसबीएन 978-8-18588-003-7
8. मान, रण सिंह; मान, के. (1989), ट्राइबल कल्चर्स एंड चेंज , मित्तल प्रकाशन
9. उन्नीथन-कुमार, माया (1997)। पहचान, लिंग और गरीबी: राजस्थान में जाति और जनजाति पर नए दृष्टिकोण । बरगहन किताबें। आईएसबीएन 978-1-57181-918-5.
10. गरासिया, राजपूत पर एथ्नोलॉग (18 वीं एड।, 2015)
11. गरासिया, आदिवासी पर एथ्नोलॉग (18 वीं एड।, 2015)
12. गरासिया आदिवासियों ने ली शराब छोड़ने की शपथ pledge

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor
7.54

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com